जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

विवेकी का कार्य तो यही है कि अपनी बात इसप्रकार रखे कि सुननेवाले के सम्मान को चोट भी न पहुँचे और सत्य उसके सामने आ जाये।
ह्न सत्य की खोज, पृष्ठ-१२

वर्ष : 28, अंक : 16 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
नवम्बर (द्वितीय) 2005 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

भगवान महावीर निर्वाणोत्सव सानन्द मनाया

१. जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में महावीर निर्वाणोत्सव पर त्रिमूर्ति जिनालय में प्रात: सामूहिक जिनेन्द्र-पूजन के पश्चात् निर्वाण लाडू चढाया गया। तत्पश्चात् **पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल** के प्रासंगिक प्रवचन का लाभ श्रोताओं को प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त **दिग. जैन तेरहपंथी बड़ा मंदिर,** जौहरी बाजार में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के दोनों समय प्रासंगिक विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये।

२. देवलाली (नासिक-महा.) : यहाँ पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दि. २६ अक्टूबर से २ नवम्बर तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं विधान का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर प्रात: **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के सर्वविशुद्धज्ञानाधिकार पर मार्मिक व्याख्यान हुये तथा रात्रि में **ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, ब्र. हेमचन्दजी 'हेम'** के प्रवचनों का लाभ मिला।

दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा पण्डित मधुकरजी जैन, जलगाँव एवं सायंकाल बालकक्षा पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल ने ली। इस अवसर पर भ.शांतिनाथ विधान एवं पंच परमेष्ठी विधान का आयोजन हुआ। विधान के सम्पूर्ण कार्य ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित सुनीलजी 'धवल' ने सम्पन्न कराये। निर्वाणोत्सव पर निर्वाण लाडू चढाया गया। **ह्न मुकुन्दभाई खारा**

३. धरमपुर (गुज.) : यहाँ दिनांक ३० अक्टूबर से २ नवम्बर २००५ तक श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम में **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के आत्मानुभूति स्वरूप एवं प्रक्रिया विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये। साथ ही ब्र. राकेशजी एवं पण्डित उत्तमचन्दजी के भी प्रवचनों का लाभ मिला। प्रतिदिन तीनों समय सामूहिक जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये। दिनांक २ नवम्बर को श्री भरत शाह के निर्देशन में शांतिविधान का आयोजन किया गया।

४. मोटी जहर (खेड़ा-गुज.) : यहाँ निर्वाणोत्सव के अवसर पर ३१ अक्टूबर से ५ नवम्बर तक शिक्षण-शिविर का आयोजन हुआ; जिसमें पण्डित जितेन्द्रसिंह यादव जयपुर के समयसार एवं मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला।

शिविर एवं विधान सम्पन्न

द्रोणगिरि (छतरपुर-म.प्र.) : यहाँ श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में निर्माणाधीन **सिद्धायतन** में दिनांक ४ नवम्बर से १० नवम्बर २००५ तक तृतीय आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर एवं विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर **बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन** खनियांधाना के प्रवचनों के अतिरिक्त विदुषी ब्र. विमलाबेन, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित कोमलचन्दजी टड़ा, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित अरुणकुमारजी शास्त्री बड़ामलहरा आदि विद्वानों का प्रवचनों एवं कक्षाओं के माध्यम से लाभ प्राप्त हुआ।

शिविर उद्घाटन श्री सुखदयालजी देवडिया परिवार केसली द्वारा किया गया। झण्डारोहण प्रसन्नकुमारजी जैन जबलपुर ने किया। विधि-विधान के कार्य श्री श्रेणिक जैन जबलपुर ने सम्पन्न कराये।

इस अवसर पर रात्रि में आचार्य समन्तभद्र शिक्षण संस्थान के छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। **- मस्तांई प्रेमचन्द जैन**

नई दिल्ली में एक सप्ताह समयसार की धूम

दिल्ली : यहाँ कुन्दकुन्द भारती प्राकृत भवन में सिद्धान्त चक्रवर्ती परमपूज्य १०८ **आचार्यश्री विद्यानन्दजी मुनिराज** के पावन सान्निध्य में दिनांक १६ अक्टूबर से २३ अक्टूबर,२००५ तक **समयसार सप्ताह** का भव्य आयोजन किया गया।

प्रतिदिन प्रात: ८.३० से ९.३० तथा सायंकाल ३ से ४ तक समयसार की विभिन्न गाथाओं पर विद्वत् परिषद के अध्यक्ष **तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के मार्मिक व्याख्यान हुये। विषय को स्पष्ट करने की दृष्टि से उठाये गये प्रश्नों का भारिल्लजी द्वारा समुचित समाधान किया गया।

वाचना में पूज्य गणिनी आर्यिका प्रज्ञमतिजी एवं स्वस्ति भट्टारक श्री चारुकीर्तिजी मूड़बिद्री की भी मांगलिक उपस्थिति रही। समागत विद्वानों में सर्वश्री डॉ. दामोदरजी शास्त्री, डॉ. प्रेमसुमनजी जैन, डॉ. त्रिलोकचन्दजी कोठारी, डॉ. फूलचन्दजी 'प्रेमी', डॉ. राजेन्द्रजी बंसल, डॉ. सत्यप्रकाशजी जैन, डॉ. वीरसागरजी जैन, डॉ. अनेकान्तजी जैन, डॉ. कल्पनाजी जैन एवं समन्वय वाणी के सम्पादक श्री अखिलजी बंसल उपस्थित थे। करणानुयोग पर पूज्य गणिनी आर्यिका प्रज्ञमतिजी का भी सारगर्भित व्याख्यान हुआ।

पूज्य मूनिश्री अपूर्वसागरजी के समाधि-मरण पर विनयांजलि की गई तथा डॉ. देवेन्द्रकुमारजी शास्त्री नीमच (पूर्व अध्यक्ष विद्वत्परिषद) के निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। **ह्न सतीश जैन (आकाशवाणी)**

कोलकाता पंचकल्याणक पत्रिका
२६ दिसम्बर, २००५ से १ जनवरी, २००६ तक

कोलकाता पंचकल्याणक पत्रिका
२६ दिसम्बर, २००५ से १ जनवरी, २००६ तक

सम्पादकीय –

नींव का पत्थर

14 ह्न रतनचन्द भारिल्ल

आयोजन का प्रयोजन पहचानें

तिरिया चरित्रं, पुरुषस्य भाग्यं। देवो न जानाति, कुतो मनुष्य।।

हो सकता है कि सामान्य नारियों के मायाचारी कुटिल स्वभाव को देखकर और पुरुषों के अनायास होते उत्थान-पतन को देखकर कवि ने अफसोस व्यक्त करते हुए उक्त पंक्तियाँ लिखी हों ह्न

ये पंक्तियाँ लिखते समय कवि का क्या अभिप्राय रहा होगा? उनके दृष्टिपथ में कैसी स्त्रियाँ और कैसे पुरुष रहे होंगे ह्न यह तो मैं नहीं कह सकता, क्योंकि स्त्री जाति कुटिलता के लिए बदनाम भी रही हैं; सामान्यतः अधिकांश नारी जाति पेट में पाप रखती हैं, छल करती हैं, वे कब क्या कर बैठें ह्न इस बात को देवता भी नहीं जान सकते। मनुष्य तो कैसे जान सकेंगे; परन्तु समता श्री और जीवराज उन साधारण मनुष्यों में नहीं है। उन्होंने तो स्व-पर के हित में अपने जीवन को अनेक मोड़ दिए और अंत में अपने मानव जीवन को धन्य कर लिया।

''जब उक्त पंक्तियों के आलोक में मैं समताश्री के चरित्र और जीवराज के भाग्य को देखता हूँ तो मुझे लगता है निश्चय ही ये पंक्तियाँ इन्हीं जैसे किन्ही महान चरित्र नायक-नायिकाओं एवं सौभाग्यशाली जीवों के संदर्भ में कहीं गईं होंगी।

समता श्री के बचपन से विवाह तक की जीवन यात्रा को देखकर यह कौन कल्पना कर सकता था कि ब्याह के बाद समताश्री को कैसी-कैसी मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा और वे किन-किन परिस्थितियों से गुजरेंगी? तथा वे स्वयं के व्यक्तित्व का विकास किस ढंग से कैसे करेंगी? यह सब उनके भविष्य के गर्भ में था।

अभी तक 'भरतजी घर में ही वैरागी' की कहानी सुना करते थे परन्तु भरतजी के सामने ऐसी कोई चुनौतियाँ नहीं थीं; जैसी समताश्री के समक्ष उपस्थित हुई; परन्तु वे वस्तु स्वातंत्र्य की श्रद्धा के बल पर विषम से विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए स्वयं को संभाले रही।' यह सुखद आश्चर्यजनक बात है।

यदि तत्त्वज्ञान का बल न होता, क्रमबद्ध पर्याय की श्रद्धा न होती, चार अभाव और षट्कारकों का ज्ञान न होता तो उसके जीवन के किसी भी मोड़ पर, कोई भी असंभावित दुर्घटना घट सकती थी। जीवन के किसी भी उतार-चढ़ाव में वह विचलित हो सकतीं थी; नारी के चरित्र को सर्वज्ञ के सिवाय और कौन जान सकता था, पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ; क्योंकि उसे तत्वज्ञान का सम्बल था।

आज हम समताश्री की तुलना पौराणिक और ऐतिहासिक नारियों से करने के लिए पीछे मुड़कर देखते हैं तो राजुल, सीता, द्रौपदी और अंजना से भी वह दो कदम आगे दिखाई देती है। यह सब उसके जीवन पर पड़े अध्यात्म का ही प्रभाव है।

यदि अन्य नारियों को अपने जीवन को सार्थक करना हो तो उन्हें समताश्री के आदर्शों पर चलना ही होगा।''

इसीप्रकार जब हम जीवराज के भाग्य का अवलोकन करते हैं तो उनके भाग्य ने भी अनेकों करवटें बदलीं। उनके जीवन ने यह सूक्ति सार्थक कर दी कि **'सबै दिन जात न एक समान'** जीवराज यौवन के आरंभ में चारुदत्त की भाँति भटक गये थे। किसी तरह सन्मार्ग पर आये तो कुछ दिन बाद ही जब उन्हें पूरे दायें अंग में लकवा और हाथ-पैरों में कम्प रोग का भयंकर आक्रमण हुआ तो सभी ने उनके जीवन की आशा ही छोड़ दी थी; परन्तु उनके भाग्य ने पुनः करवट बदली और उनकी सती सावत्री जैसी धर्मपत्नी समताश्री अपनी अथक सेवा से अन्ततः उन्हें मौत के मुँह से छुड़ाकर वापिस लाने में सफल हो ही गईं।

जीवराज का कम्परोग तो ठीक हुआ ही, आवाज भी लौट आई।

महावीर जयन्ती के मंगल महोत्सव के दिन उनके मुँह से वर्षों बाद महावीर स्तवन के निम्नांकित छन्द निकले तो सभी श्रोताओं के मन मयूर नाच उठे। समताश्री के तो हर्ष का ठिकाना ही न रहा। वे बोल रहे थे ह्न

जिसने बताया जगत को प्रत्येक कण स्वाधीन है।
कर्ता न धर्ता कोई है, अणु-अणु स्वयं में लीन है।।
आतम बने परमात्मा, हो शान्ति सारे देश में।
है देशना सर्वोदयी, महावीर के संदेश में।।
जो निज दर्शन ज्ञान चरित अरु, वीर्य गुणों से हैं महावीर।
अपनी अनन्त शक्तियों द्वारा, जो कहलाते हैं अतिवीर।।
जिसके दिव्य ज्ञान दर्पण में, नित्य झलकते लोकालोक।
दिव्यध्वनि की दिव्यज्योति से, शिवपथ पर करते आलोक।।

जीवराज को अपने जवानी के जोश में खोए होश की सजा मानो इसी जन्म में मिल चुकी थी। उनके भाग्य के इस उतार-चढ़ाव को देखकर सैकड़ों लोगों ने सबक सीखा और अपने इस दुर्लभ मनुष्यभव को सफल करने के लिए नियमित स्वाध्याय करने की प्रतिज्ञायें कर लीं; क्योंकि उन्होंने पढ़ा था, सुना था कि ह्न

ज्ञान समान न आन जगत में सुख को कारण।
यह परमामृत जन्म-जरा मृतु रोग निवारण।।

तथा ह्न

कोटि जन्म तपतपें ज्ञान बिन कर्म झरैं जो।
ज्ञानी के छिन माँहि त्रिगुप्ति से सहज टरैं ते।[3]

महावीर जयन्ती के दिन ही जीवराज को मानो नया जन्म मिला है, अतः उन्हें शाम की संगोष्ठी में विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित करके उनका स्वागत किया गया। उन्होंने गद्-गद् भाव से अपनी हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए आज के विषय से संबंधित कुछ वे बातें भी कहीं, जो उन्होंने बीमारी की अशक्त अवस्था में टेप प्रवचनों द्वारा सुनी थीं। **(क्रमशः)**

जैनधर्म दर्शन एवं संस्कृति सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित जैन विद्या संस्थान, भट्टारकजी की नसियाँ जयपुर द्वारा निर्धारित **पत्राचार जैन धर्म-दर्शन एवं संस्कृति सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम २००६** भारत स्थित उन अध्ययनार्थियों के लिये होगा जिन्होंने किसी भी विश्वविद्यालय से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की है। इसका माध्यम हिन्दी भाषा होगा। पाठ्यक्रम **का सत्र १ जनवरी से ३१ दिसम्बर २००६** तक रहेगा।

निर्धारित आवेदन पत्र जयपुर कार्यालय से मंगाकर **दिनांक ३० नवम्बर २००५** तक निम्न पते पर भेजें। पाठ्यक्रम का शुल्क 200/-रुपये ड्राफ्ट द्वारा 15 दिसम्बर 2005 तक भेजना होगा।

पता ह्न डॉ. कमलचन्द सौगाणी, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी, सवाई रामसिंह रोड, जयपुर-३०२००४ (राज.)

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार 39

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

पन्द्रहवाँ प्रवचन

प्रवचनसार परमागम का ज्ञेयतत्त्वप्रज्ञापन महाधिकार चल रहा है। इसमें द्रव्यसामान्यप्रज्ञापनाधिकार की चर्चा हुई, अब द्रव्यविशेषप्रज्ञापनाधिकार की चर्चा आरंभ करते हैं। यह द्रव्यविशेषप्रज्ञापनाधिकार १२७वीं गाथा से १४४वीं गाथा तक है। इसमें जो विषयवस्तु है; वह अपेक्षाकृत बहुत सामान्य है एवं जो धर्म में थोड़ी भी रुचि रखते हैं, उनको भी इस विषय-वस्तु की जानकारी रहती है।

इसमें जीवादिक छह द्रव्यों का वर्णन है; जो पंचास्तिकाय, तत्त्वार्थ-सूत्र, द्रव्यसंग्रह एवं छहढाला आदि सर्वसुलभ ग्रन्थों में भी है। जो विषयवस्तु हमने इन ग्रन्थों में पढ़ी है; उसे ही यहाँ प्रकारान्तर से १८ गाथाओं में प्रस्तुत किया है; लेकिन प्रवचनसार की यह अपनी विशेषता है कि इसमें छह द्रव्यों को जीव-अजीव, मूर्तिक-अमूर्तिक, सक्रिय-निष्क्रिय, लोक-अलोक, अस्तिकाय-नास्तिकाय आदि अनेकप्रकार के अनेक वर्गों में विभाजित किया है। जबकि अन्य सभी ग्रन्थों में उन्हें मात्र जीव और अजीव ह्न इसप्रकार एक ही वर्ग में विभाजित किया है।

वस्तुस्थिति इसप्रकार है कि जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल ह्न इसप्रकार द्रव्य छह प्रकार के हैं। इनमें अजीव नामक कोई द्रव्य नहीं है; परन्तु जीवको मुख्य बनाकर उन छह द्रव्यों को दो भागों में बाँटा गया है। एक पक्ष में जीव नामक एक ही द्रव्य रखा है एवं दूसरे पक्ष में अन्य पाँच द्रव्यों को रखकर उन्हें अजीव कहा गया; इसप्रकार से जीव और अजीव ये दो द्रव्य हैं।

आचार्य नेमिचन्द्रकृत द्रव्यसंग्रह का मंगलाचरण इसी वर्गीकरण से प्रारम्भ होता है ह्न

'जीवमजीवं दव्वं जिणवरवसहेण जेण णिदिट्ठं।'

जिस भगवान ने जीव और अजीव द्रव्यों को हमें बताया; उन्हें हम नमस्कार करते हैं। इसप्रकार यहाँ जीव-अजीव की मुख्यता से ही विभाग किया गया है। मैं स्वयं जीव हूँ और मैंने बहुत से अजीव पदार्थों को जीव मान रखा है। स्वयं को उन अजीव पदार्थों से भिन्न जानने के लिए ही ये दो भेद किये हैं। भेदविज्ञान की मुख्यता से ही उनका बँटवारा किया गया है।

यहाँ जीव-अजीव की परिभाषायें इसप्रकार दी हैं ह्न चेतना लक्षण जीव है एवं जिनमें चेतना नहीं है, वे अजीव हैं। यद्यपि अजीव में जो पाँच द्रव्य आते हैं, उनकी पृथक् से अपनी-अपनी परिभाषाएँ हैं; तथापि यहाँ एक ऐसी परिभाषा आवश्यक थी, जो पाँचों द्रव्यों में घटित हो, जो पाँचों को अपने में समेट सके। इसलिए जिसमें चेतनालक्षण नहीं है, वह अजीव है ह्न ऐसी नकारात्मक (अभावात्मक-निगेटिव) परिभाषा दी गई है।

जीव चेतनालक्षण सहित है, पुद्गल स्पर्श-रस-गंध-वर्ण सहित है और धर्म की गतिहेतुत्व, अधर्म की स्थितिहेतुत्व, आकाशद्रव्य की अवगाहनहेतुत्व एवं काल की परिभाषा परिणमनहेतुत्व है।

जब प्रत्येक द्रव्य की सकारात्मक परिभाषायें उपलब्ध हैं तो फिर नकारात्मक (निगेटिव) चर्चा क्यों की गई ?

भाई ! अजीव की बात ही कुछ अजीव है; क्योंकि वह शब्द स्वयं नकारात्मक (निगेटिव) है, उसका नामकरण ही नकारात्मक (निगेटिव) हुआ है। जो जीव नहीं है, वह अजीव; इसलिए जिसमें चेतना नहीं है, वह अजीव है। स्व-पर विभागरूप भेदविज्ञान की सिद्धि के लिए ऐसी परिभाषा दी हैं।

इस अधिकार में आचार्यदेव ने सर्वप्रथम जीव-अजीव इसप्रकार दो विभाग किये। फिर प्रत्येक द्रव्य का लक्षण बताया; फिर छह द्रव्यों के समुदाय को विश्व कहकर, उसे दो भागों में विभाजित किया।

जहाँ छहों द्रव्य पाये जावे, वह लोक या लोकाकाश और जहाँ अकेला आकाश ही हो, वह अलोक या अलोकाकाश है। इसप्रकार आचार्यदेव ने यहाँ आकाश के नहीं, अपितु षड्द्रव्यमयी विश्व के दो भेद किये हैं ह्न लोक और अलोक। जिसप्रकार जीव से इतर अजीव है; उसीप्रकार ही लोक से इतर अलोक है। लोक यह नामकरण भावात्मक (पॉजिटिव) है तो अलोक यह नामकरण अभावात्मक (निगेटिव) है।

फिर सक्रिय द्रव्य और निष्क्रिय द्रव्य ह्न ये दो भेद किये। छहों द्रव्यों में जीव एवं पुद्गल सक्रिय हैं। शेष चार द्रव्य निष्क्रिय हैं। **(क्रमशः)**

बाल संस्कार शिविर सानन्द सम्पन्न

फलटन (महा.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन रत्नत्रय स्वाध्याय मंडल एवं पाठशाला फलटन के तत्त्वावधान में दिनांक २३ से २७ अक्टूबर, २००५ तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में पण्डित संतोषजी सावजी अम्बड, पण्डित धवलजी गांधी नातेपुते एवं दर्शनजी गांधी द्वारा बालबोध-३ एवं बालपोथी-२ की कक्षायें ली गई तथा सामूहिक कक्षा में विभिन्न जैनसिद्धान्तों पर मार्मिक चर्चा हुई।

प्रतिदिन जिनेन्द्र-पूजन, भक्ति एवं विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये; जिसमें **भेदविज्ञान** नामक नाटिका विशेष रही। अन्तिम दिन छात्रों की परीक्षा लेकर उत्तीर्ण छात्रों को पुरस्कृत किया गया। **ह्न प्रशान्त दोशी**

पत्राचार अपभ्रंश सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित अपभ्रंश साहित्य अकादमी द्वारा **पत्राचार अपभ्रंश सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम का चौदहवाँ सत्र १ जनवरी २००६** से आरंभ किया जा रहा है।इसमें हिन्दी एवं प्रान्तीय भाषा विभागों के साथ-साथ अन्य सभी विभागों के अध्यापक, शोधार्थी, अध्ययनरत छात्र संस्थानों में कार्यरत विद्वान सम्मिलित हो सकेंगे।

नियमावली एवं आवेदन पत्र **दिनांक ३० नवम्बर, ०५** तक निम्न पते पर भेजें। आवेदन पत्र प्राप्त होने की अन्तिम तारीख **१५ दिसम्बर, ०५** है।

पता ह्न डॉ. कमलचन्द सौगाणी, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी, सवाई रामसिंह रोड, जयपुर-३०२००४ (राज.)

सहयोग राशियाँ प्राप्त

1. स्व. श्री गुलाबचन्दजी कटारिया की स्मृति में श्री इन्द्रचन्दजी गंगवाल की ओर से जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान को कुल १००१/- रुपये प्राप्त हुये है।

2. श्री राजेशकुमार एवं पंकजजी की मातुश्री श्रीमती पुष्पाबाई की स्मृति में जैनपथप्रदर्शक को ५००/- रुपये प्राप्त हुये है।

3. श्री ताराचन्दजी जैन, मानसरोवर-जयपुर के जन्म दिवस के उपलक्ष में १०१ रुपये प्राप्त हुये।

4. श्रीमती भानूमतिजी अजमेरा जयपुर की ओर से ५०१/-रुपये प्राप्त हुये।

आप सभी का जैनपथप्रदर्शक परिवार हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता है।

कोलकाता पंचकल्याणक पत्रिका
२६ दिसम्बर, २००५ से १ जनवरी, २००६ तक

कोलकाता पंचकल्याणक पत्रिका
२६ दिसम्बर, २००५ से १ जनवरी, २००६ तक

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

वैराग्य समाचार

१. अकोला निवासी श्री मधुकररावजी उदापुरकर का दिनांक १० सितम्बर को ७२ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया । आप धार्मिक प्रवृत्ति के शांत एवं स्वाध्यायप्रिय व्यक्ति थे। ज्ञातव्य है कि आपकी धर्मपत्नि विदुषी स्नेहलताजी उदापुरकर का तत्त्वप्रचार-प्रसार में सक्रिय योगदान रहता है। आपकी स्मृति में १००१/-रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

२. नागपुर निवासी विदुषी श्रीमती चिन्ताबाई मिट्ठूलालजी मोदी का दिनांक २० अक्टूबर, २००५ को प्रात: ७.२५ बजे आत्मचिंतन करते हुये देहावसान हो गया है। आप नागपुर स्वाध्याय मंडल में नीव का पत्थर थीं। यहाँ मुमुक्षु मण्डल में प्रतिदिन आपके प्रवचनों का लाभ मिलता था। आपकी भाषा शैली बहुत सरल थी। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित गतिविधियों में सदैव आपका सक्रिय सहयोग रहता था। आपके निधन से नागपुर मुमुक्षु मण्डल को अपूरणीय क्षति हुई है।

३. भूलेश्वर-मुम्बई निवासी श्रीमती मैनादेवी धर्मपत्नी श्री मदनलाल जैन (पाटनी) का दिनांक २८ सितम्बर, २००५ को देहावसान हो गया है। आप सरल स्वभावी एवं स्वाध्याय प्रिय महिला थीं। आपकी स्मृति में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को ५०००/- रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

उक्त सभी के स्वर्गवास पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं जैनपथ प्रदर्शक परिवार भावना भाता है कि दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो तथा आपके परिजन तत्त्वज्ञान के अवलम्बन से धैर्य धारण करें। **ॐ शांति !**

संस्थाएँ पोस्ट ऑफिस में विनियोजन न करें

भारत सरकार के दिनांक 27 जुलाई, 05 के गेजेट से एक अधिसूचना जारी करते हुये डाकघर नियम 1981 में संशोधन करते हुये नियम बने हैं।

इस संशोधन अनुसार पोस्ट ऑफिस द्वारा केवल व्यक्तिगत खाते में ही जमा राशि (डिपोजीट) स्वीकार की जा सकेगी। अन्य सभी खातेदार डाकघर में जमा अपनी डिपोजीट राशि दिनांक 31 दिसम्बर, 05 तक वापिस ले लेवें। 31 दिसम्बर के बाद इन डिपोजीट पर ब्याज देय नहीं होगा।

यदि संस्थाओं ने ट्रस्ट की डिपोजीट डाकघर में किसान विकास पत्र, अन्य सेविंग स्कीम या टर्म डिपोजीट के रूप में रखी है तो उन्हें यह राशियाँ वापिस लेनी होगी। अत: पोस्ट ऑफिस से सम्पर्क कर डिपोजीट की राशि वापिस लेकर अन्यत्र विनियोजन करें।

संस्थाओं द्वारा गत दो साल से भारत सरकार के 8 प्रतिशत ब्याज के रिजर्व बैंक बॉन्ड में विनियोजन किया जा सकता है। यह सुविधा एच.डी.एफ.सी बैंक अथवा आई.सी.आई. सी.आई बैंक के माध्यम से मिल सकती है। जिन संस्थाओं ने अपना ट्रस्ट चेरिटी कमिश्नर के कार्यालय में रजिस्टर करवाया है, उनको चेरिटी कमिश्नर का रजि. सर्टीफिकेट बताने पर ये बॉण्ड प्राप्त हो सकते हैं। आप अपने नजदीकी बैंको से सम्पर्क कर उचित कार्यवाही कर सकते हैं।

ह्न वसन्तभाई दोशी

संक्षिप्त समाचार

* छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय ने अंडों को मांसाहारी भोजन करार देकर इसकी सार्वजनिक एवं खुलेआम बिक्री पर रोक लगाई।

* भारत ने श्रीलंका को वन-डे शृंखला में पराजित किया।

* दुनिया के वृहदतम देशों में शुमार भारत में जल की बर्बादी, अन्य विकसित देशों की तुलना में 15 फीसदी अधिक होती है।

* संयुक्त राष्ट्र की वोल्कर कमेटी की तेल घोटाले सम्बन्धी रिटायर चीफ जस्टिस आर.एस. पाठक की रहनुमाई में न्यायिक जाँच के आदेश। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने विदेशमंत्री नटवर सिंह को विदेश मंत्रालय पद से मुक्त कर, बिना विभाग के मंत्री रखा।

* बीएसएफ द्वारा जम्मू-कश्मीर भूकम्प पीडितों के लिये अपना एक दिन का वेतन कुल 4 करोड़ 30 लाख रुपये प्रधानमंत्री राहत कोश में जमा।

* पूर्व राष्ट्रपति डॉ. के. आर. नारायणन का बुधवार, दिनांक 9 नवम्बर को दिल्ली में निधन।

* 1993 मुम्बई बमकाण्ड के प्रमुख आरोपी अबू सलेम और उसकी सहयोगी मोनिका बेदी को पुर्तगाल से भारत लाया गया।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

16 से 21 नवम्बर, 2005	**किशनगढ़**	**पंचकल्याणक**
26 से 01 जनवरी, 2006	**कोलकाता**	**पंचकल्याणक**
13 से 19 जनवरी,2006	**सागर**	**पंचकल्याणक**
04 से 11 फरवरी, 2006	**कोटा**	**पंचकल्याणक**

ध्यान दें !

साधना चैनल पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन प्रतिदिन रात्रि 10.20 से 10.40 बजे तक प्रसारित हो रहे हैं। प्रसारण में किसी वजह से 5-7 मिनिट की देर भी हो सकती है।

यदि निर्धारित समय से 10 मिनिट बाद तक भी प्रवचन प्रारंभ नहीं हो तो श्री पीयूषकुमारजी शास्त्री से 09414717829 या (0141) 2705581 नं. पर सम्पर्क करें।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) नवम्बर (द्वितीय)2005

J. P. C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए. जैनविद्या व धर्मदर्शन तथा इतिहास, नेट एवं **पण्डित जितेन्द्र वि.राठी,** साहित्याचार्य
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127